SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

ISSN No 2347-7075
Impact Factor 7.328
Volume 2 Issue 7

INTERNATIONAL JOURNAL of ADVANCE and APPLIED RESEARCH

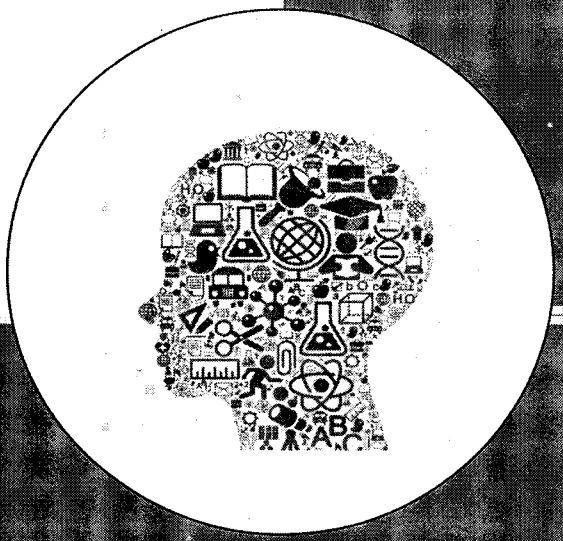

Publisher: P. R. Talekar
Secretary,
Young Researcher Association
Kolhapur(M.S), India

Young Researcher Association

INCIPAL
JI COLLEGE
Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.2 Issue-7 March- Apr 2022

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

March-Apr Volume-2 Issue-7

On

Chief Editor
P. R. Talekar
Secretary
Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

Editor
Prof. Dr. V. V. Killedar
Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur

Co- Editors		
डॉ. एस. पी. पवार	लैफ्ट.डॉ. आर.सी. पाटील	डॉ. एस. जे. आवळे
प्रा. एन.पी. साठे	प्रा. ए. बी. घुले	प्रा. डॉ.एम. टी. रणदिवे
डॉ. एन. ए. देसाई		

Published by- Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Dist Hingoli

SHIVAJI COLLEGE

64	हिंदी उपन्यास: किसान विमर्श सुनील चांगदेव काकडे	163-164
65	मिले सुर मेरा तुम्हारा: किसान समस्या डॉ. सुनिता हुन्नरगी	165-167
66	हिंदी साहित्य में किसान विमर्श प्रा. डॉ. सुरेखा प्रे. मंत्री	168-170
67	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर विचारधारा से प्रेरीत नारी (दलित समाज कि कहानियॉ : रत्नकुमार साम्भरिया के विशेष संदर्भ में) प्रा. डॉ . सुवर्णा नरसू कांबळे	171-173
68	सुशीला टाकभौरे के 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा में चित्रित दलित नारी जीवन तब्बसुम शकील पठाण	174-175
69	हिंदी साहित्य: नारी विमर्श डॉ.वैशाली प्रशांत सामंत	176-177
70	कितने प्रश्न करूँ' खंडकाव्य के माध्यम से अभिव्यक्त नारी विमर्श डॉ. वंदना पाटील	178-180
71	महिला कहानीकारों की कहानियों में महानगरीय विमर्श डॉ विठ्ठलसिंह रूपसिंह घुनावत	181-182
72	समकालीन हिंदी उपन्यासों में आदिवासी स्त्री-संघर्ष डॉ.विठ्ठल शंकर नाईक	183-187
73	जगदंबा प्रसाद दीक्षित के उपन्यासों में महानगरीय जीवन की त्रासदी सौ. वृषाली महादेव माळी	188-189
74	नारी की व्यथा, पीडा और समर्पन का चित्रण उपन्यास 'अगनपाखी' डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ	190-192
75	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श प्रा.व्ही.एच्. वाघमारे	193-194
76	किन्नरों के सामाजिक अस्तित्व को व्यक्त करता उपन्यास 'यमदिप' डॉ. रामेश्वर वरशिळ	195-196
77	धर्म की आड में स्त्री का शोषण सफिया कासम मुल्ला	197-198
78	' आना इस देश ' : एक स्त्री की असफल प्रेमकथा डॉ.युवराज माने	199-201
79	हिंदी महिला कहानीकारों में नारी विमर्श प्रा. वाय. पी.पाटील	202-203
80	आठवें और नवें दशक के हिन्दी उपन्यासों में चित्रित नारी-जीवन पर आर्थिक एवं सामाजिक वैषम्यों का प्रभाव डॉ. सुमित्रा कोत्तापल्ली	204-205
81	आधुनिक मराठी साहित्यातील धनगर समाजातील अंधश्रध्दा डॉ.संदीप वाकडे	206-208
82	जयंत नारळीकर यांच्या 'प्रषित' व 'अंतराळातील स्फोट' या कादंब-यांतील कल्पित प्रविणसिंह बहादूरसिंह शिलेदार	209-212
83	जागतिकीकरण आणि आवानओल मधील ग्रामीण स्त्री जीवन प्रा. डॉ. शीला धम्मपाल रत्नाकर	213-216
84	जागतिकीकरण आणि इंद्रजित भालेरावांची कविता प्रा.डॉ.महेश रणदिवे	217-219
85	जागतिकीकरण आणि ग्रामीण कादंबरी :'चैत' प्रा. पद्मावती प्रभाकर पाटील	220-222

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.2 Issue.7 Mar - Apr 2022

नारी की व्यथा, पीडा और समर्पन का चित्रण उपन्यास 'अगनपाखी'

डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ
प्राध्यापक, हिंदी विभागाध्यक्ष, शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली, जि. हिंगोली. - 431513
Email: wagh.sudhir001@gmail.com

शोध सार:

साहित्य मानवीय संवेदना के चिंतन की उत्तम अभिव्यक्ति है। स्त्री तो संवदना का मूर्त रूप है अर्थात कोई भी साहित्य स्त्री बिना पूर्ण नहीं है। इसलिए स्त्री और साहित्य का संबंध अखंड है। स्त्री ने सामाजिक, नैतिक एंव सांस्कृतिक रूप में भी साहित्य को अपूर्ण योगदान प्रदान किया है। इक्कीसवीं सदी की बदलती राष्ट्रीय, सामाजिक व आर्थिक स्थितियों तथा शिक्षा के प्रचार-प्रसार ने स्त्री जीवन को अत्याधिक प्रभावित किया है। इसलिए स्त्री-विमर्श चिंतन ने साहत्य में विशेष स्थान प्राप्त किया है।

मुख्य शब्द: मानवीय संवेदना, व्यथा, पीडा और समर्पन, स्वार्थ, स्त्री की असहायता और अत्याचार।

साहित्य मानवीय संवेदना के चिंतन की उत्तम अभिव्यक्ति है। स्त्री तो संवदना का मूर्त रूप है अर्थात कोई भी साहित्य स्त्री बिना पूर्ण नहीं है। इसलिए स्त्री और साहित्य का संबंध अखंड है। स्त्री ने सामाजिक, नैतिक एंव सांस्कृतिक रूप में भी साहित्य को अपूर्ण योगदान प्रदान किया है। आधुनिक कालीन साहित्य में स्त्री को लेकर इतना कुछ सृजन किया गया कि स्त्री- विमर्श का दौर ही प्रारंभ हो गया। जहाँ अन्य श्रोत्रांओं की तरह साहित्य में भी पुरूषों का वर्चस्व था, वहाँ महिलाओं ने बडी तेजी से साहित्य में इस तरह से कदम रखा कि वह छा ही गयी। इन महिला साहित्यकारों ने स्त्री जीवन के विविध पहलुओं, परिस्थितिओं को पूरी जिम्मेदारी के साथ उकेरा।

स्वातंत्र्योत्तर काल से वर्तमान युग तक बहुत बडी संख्या में महिलाओं का आगमन हुआ। इस युग में नारी की सामाजिक और आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो गई है। अन्तरजातीय विवाह और विधवा विवाह को वैधानिक किए जाने से नारी की मानसिक स्थिती दृढ हो गई। अनेक महिला कथाकारों का उदय इस युग में हुआ। नितांत अछुते और नए विषयों को लेकर कहानियाँ और उपन्यास लिखे। विषय वस्तु कार्य शैली और शिल्प की दृष्टि से इस युग की लेखिकाओं का योगदान उल्लेखनिय है। इक्कीसवीं सदी की बदलती राष्ट्रीय, सामाजिक व आर्थिक स्थितियों तथा शिक्षा के प्रचार-प्रसार ने स्त्री जीवन को अत्याधिक प्रभावित किया है। इसलिए स्त्री-विमर्श चिंतन ने साहत्य में विशेष स्थान प्राप्त किया है।

समाज में जाहाँ भी दमन है, शोषण है, अत्याचार है स्त्री साहित्य उसके विरोध में खडा हुआ। अब दो प्रकार से स्त्रीवादी साहित्य सजृन किया जा रहा है- एक सामाजिक शोषण के विरुध्द और दुसरा देह-भोग के विरुध्द । "आज का सृजन नारीवादी सृजन नही, नारी केंद्रित सवालों को बडे आशयों में लानेवाला नारी की मुक्ति को साधारण जन की सार्वदेशिक मुक्ति से जोडनेवाला, पर बेहतर मानवीय और तर्कसंगत सामाजिक संरचना में नारी को उसकी सही हैसयित के साथ प्रतिष्ठा देने की कोशिश में लगा नारी अस्मिता का प्रामाणिक सृजन है"। इतना निश्चित है कि इक्कीसवीं सदी के महिला साहित्यकारों ने अपने समय और सामाज की नब्ज को गहरी संदवेदना के साथ पकडा है।

वर्तमान युग में अनेक उत्कृष्ट और प्रतिभा संपन्न महिला उपन्यासकारों का आगमन हुआ। इन महिला उपन्यासकारों में सबसे प्रभावित नाम मैत्रयी पुष्पा का है। मैत्रयी पुष्पा का उपन्यास 'अगनपाखी' रचना की नायिका भुवनमोहिनी को असहाय होने के कारण विनम्र दिखाया है, किंतु भीतर से किस ताकत का सामना करती है यह दिखलाया है। भुवनमोहिनी, पत्नी स्वर्गीय विजयसिंह वल्द स्वर्गीय दुरजयसिंह, निवासी ग्राम विरारा, जिला झाँसी यह दावा करती है कि उसके पति के हिस्से की चल-अचल संपत्ति की हकदार है। उसके पति के साथ उसे मृतक दिखाया और उसके जेठ कुँवर अजयसिंह ने संपत्तीपर उसके अकेले का हक बरकरार रखा है। क्योंकि स्वयं विजयसिंह को कोई संतान नहीं। भुनमोहिनी की कचहरी से अर्ज है कि अपने पति की जायदाद का हक उसे सौंपा जाये। वह कुँवर अजयसिंह की हकदारी पर सक्त ऐतराज करती है। वैसे देखा जाय तो इस अन्याय में भुवनमोहिनी को अपने हक के लिए लड़ना पड़ा। वह किसी भी प्रकार से स्वतंत्रपूर्वक जीवन व्यतीत नहीं कर पाती है। भुवनमोहिनी की माँ एक साहसी और कर्मठ स्त्री है। पति की मृत्यु के बाद घर की सारी जिम्मेदारी संभालती है। मुन्नी अर्थात् भुवनमोहिनी की बडी बहन सहृदय एवं संवेदनशील नहीं। जब उसे पता चला की भुवन के विवाह के रुप में उसके साथ छल किया गया तो वह दुखी और क्रोधित हुई। भुवन की जेठानी अर्थात् अजयसिंह की पत्नी अपने पति के हर काम में सहयोगिनी है। काम अच्छा हो या बुरा, अपने पति का साथ देती है। देवर विजयसिंह की मौत के बाद भुवन को सती करा कर पूरी जायदाद हडपने की योजना का समर्थन करती है। ऐसी सारी परिस्थितीयाँ भुवन के सामने आती है किंतु अत्याधिक साहसी बनकर संघर्ष कर प्रस्तुत उपन्यास में दिखाई गयी है। वह एक ओर क्रांति का संदेश देती है तो दूसरी ओर व्यवस्था के प्रति विद्रोह की भावना को भी जगाती है।

सामाजिक चेतना की दृष्टि से मैत्रयी पुष्पा ने अपने इस उपन्यास में यह कहा है कि खुद को भुवन के रुप में रखकर अपने आप में लड रही थी और परिवर्तन के लिए विद्रोह तक जाने में कभी चार कदम बढती तो कभी दो कदम पीछे हटती। परंपरा एवं रुढी के प्रति नारी का विद्रोह पुरुष प्रताडना से नारी में उभरी अकेलेपन की भावना, गॉवों में दारिद्रता आपसी बैर, आर्थिक दुर्बलता के कारण स्त्रियों का शोषन आदि अनेक विषय इस उपन्यास में आये है। आज की स्त्री परम्पारिक संस्कारों में जकडी है, परावलम्बी है आश्रित है ग्रामीण क्षेत्रों में अब शिक्षा व जानकारी आने से स्त्रियों में अन्याय के प्रति जागृति आयी है। स्त्री को प्राचिन काल से समाज की सामाजिक मान्यताएँ, रुढियों, रीति रिवाजों ने शोषित किया गया है। लेकिन 'अगनपाखी' में लेखिकाने भुवन के माध्यम से अपने लक्ष्य का हासिल करके ही छोडा है।

मैत्रयी पुष्पा का 'अगनपाखी' उपन्यास लघु उपन्यास स्मृति दंश का नया सस्करण है। इसमें पुरुष समाज द्वारा स्त्री पर किये गये अत्याचार का अंकन है। कथा की मार्मिकता पाठकों को -हदय को स्पर्श करती है। 'अगनपाखी' में नारी की व्यथा पीडा और समर्पन का चित्रण है। स्वार्थ परक पुरुष स्त्री की असहायता का लाभ उठाकर अत्याचार करता है। इसका उदाहरण नायिका भुवन और जीजा बरजारसिंह है। पुत्र चन्दर की नौकरी के लिए

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

नानी भुवन की शादी विराटा के पागल पुत्र विजयसिंह से करती है। सम्पति के लिए परिवार में झगडे पत्नियों और विधवाओं की हत्या होती है। इस उपन्यास में मानवीय सम्बन्धों की जटिलता का प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत उपन्यास के बारे में स्वयं लेखिका कहती है कि "अब यह एक नया उपन्यास है। हो सकता है पात्रों के नाम और स्थान वही हो मगर अब वहाँ का इसमें कुछ भी नहीं। अगर मैं पात्रों के स्थानों के नाम बदल देती तो भी कोई अन्तर नहीं पडता। 'अगनपाखी' उतना ही नया होता है।"[1] 'स्मृतिदंश' की भुवन भावुकता के कारण मर जाती है, पर 'अगनपाखी' की भुवन अन्याय के प्रति विद्रोह करती है।

'अगनपाखी' उपन्यास शीतलगढी,

सामाजिक चेतना के विरूध्द ग्रामांचल कीये जा रहे षडयंत्र को लेखिका जानती है। बरुआसागर, विराटा ग्रामांचल के परिवेश को बहुत सजीवता के साथ प्रस्तुत करती है। यह कथा भुवन और उसकी बहन के बेटे चन्दर के इर्द -गिर्द घूमती है नाना की मृत्यू के बाद चन्दर अक्सर अपने ननिहाल शीतलगढी में आता रहता है। जो अपनी मौसी भुवन के हम उम्र है, इसलिये दोनों का अधिक समय साथ गुजरता है, साथ-साथ खेलते है गाते एक दिन जवानी की दहलीज पर आकर खडे हो जाते है। दोनों का एक साथ अधिक समय तक साथ रहने से एक दूसरे के प्रति शारीरिक आकर्षन भी बढ जाता है। जो एक दिन शारीरिक सम्बन्ध तक पहुँच जाता है, मगर नानी उन्हें पकड लेती है और स्वंय आत्महत्या करने लगती है, इस पर चन्दर उन्हें किसी तरह शेक लेना है और अपने कुकर्म का अहसास करता है, और अपराध बोध से भरा यह सोचता है - "सुनता आया हूँ कि मौसी माँ समान होती है। नाते भूल गया कि जवानी में अन्धा हो गया"[2] मौसी बहन के बेटे चन्दर के साथ शारीरिक सम्बन्ध करीबियो का वृतान्त है। 'अगनपाखी' उपन्यास की भुवन एक ऐसी नारी है जिसका विवाह एक अर्ध विक्षिप्त व्यक्ति कुंवर विजय सिंह से कर दिया जाता है। भुवन न चाहते हुए भी अपने पति के साथ रहती है। वह कहती है- "जिज्जी, वह कुठिया की तरह भी सुख आन्द कहाँ जानता है कि मैं उसे सुख आनंद जुराऊँ। खुद को दुख ही देता रहता है। सर्दी की राज पुरी की पुरी हाथ पाँच धोते निकाल देता है। कहता है हर जगह किडे है, हर जगह खुन है"[3] ऐसे अनमेल विवाह को निभाने को प्रयास करने के बाद जब वह सुख की कोई किरण नहीं पाती है तो वह अपनी माँ से ससूराल न जाने की जिद् करती हैं।

भुवन अपने जीवन से समझौता करने का तैयार नहीं है अर्ध्द विक्षिप्त पति कुंवर विजयसिंह के साथ रहने के बजाय अपने मायके में रहना चाहती है। क्योंकि गुलामी का सुख चेतना संपन्न भुवन को नहीं भाता है। उसके इस संघर्ष में उसकी माँ उसका साथ नहीं देती है क्योकि हमारे समाज में यह मान्यता है कि एक बार लडकी की शादी हो जाती है तो उसकी अर्थी भी ससुराल से ही उठनी चाहिए। भुवन की माँ इस विचारधारा को मानती है और वह कहती है - "ते कुंवारेपन को सपने देख रही है बेटा गया समय अपनी देह से लिपटा है क्या? बिटिया की जात बाप के ऑगन में तितली बनकर खेलती है, गाय की तरह विदा होती है व्याह पीछे कुत्ता की जौन निभानी पडती है, भौको, चीखो तो सासरे पच्छदारी में ही "[4] इस प्रकार स्त्री संघर्ष में उसे अपने मायके में आसरा नहीं मिलता है क्योकि उसके मायके वाले लोग घर में लडकी बैठाने की बदनामी नहीं लेना चाहते है। मैत्रयी पुष्पाने अपने इस उपन्यास कें द्वारा रीतिरिवाज व धर्म के नाम पर विधवा स्त्री को किस प्रकार शोषित किया जाता है इसे दर्शाया हे। यह प्रथा सती प्रथा इस प्रथा के अनुसार एक स्त्री अपने पति के मरने पर स्वंय अपने शरीर को संहर्ष त्याग देती है इस प्रकार सती होना हिन्दू समाज में गौरव की बात मानी जाती है, सती एक ऐसी प्रथा थी जिसमें विधवा स्त्री को अपने पति की चिता में जिन्दा मार दिया जाता था। कहा जाता था कि यह आत्मदाह उसकी स्वेच्छा से हे, पर जिस समाज में स्त्री के अपने जीवन में घर से बापहर जाने अपनी मर्जी से प्रेम या विवाह करने और घर के किसी महत्वपुर्ण फैसले का निर्णय लेने को अधिकार नहीं दिया गया था, फिर सजी होने का निर्णय कैसे उसका था।

इस उपन्यास में स्त्री को घर के अन्दर किस तरह नियन्त्रित किया जाता है और बचपन से ही उसे एक ही साचें में डाला जाता है भुवन के माध्यम से प्रकाश डाला गया है। भुवन के पिता न होने के कारण और बचपन के साथ लडकों के खेल खेलती है जो नानी यानी भुवन की माँ को अच्छा नहीं लगता है चन्दन कहता है - "भुवन का पतंग उडाना नानी को फूटी ऑखों नहीं आया। साइकिल मिली, उसने चलाई गिरने से जादा सीख नहीं पाई कि नारी भगवानदास से लडने पहूँच गयी।"[5] नानी ने उसे पढने से भी बैठा दिया क्योकि भुवन ने मास्टर से बहस कर ली थी और वह भुवन को घर में रखना चाहती थी। उसकी मदद चाहती थी साथ ही भुवन के खुले व्यवहार की नियान्त्रित भी करना चाहती थी। तभी तो चन्दर कहता है - "नानी ने उसे इस बात के लिए पिटा, गालियों दी। भट्टी छोत, बाप भइया नहीं तो तू ऐसी मर्दनमार भई जा रही है"[6] नानी भुवन को साँचो में ढाल रही है जैसे वह स्वंय ढल चुकी है क्यो कि आदर्श स्त्री वही जो पितृसत्ताक नैतिक प्रतिनामी को पूरी निष्टा से आत्मसात करती हुई पीढी दर पीढी उसे आगे बढाती है। उपन्यास में लेखिका ने जिलाझासी के विराट गाँव और उसके इर्द- गिर्द के प्रदेश का ग्रामांचल का यथार्थ चित्रण किया है। गाँव में अन्य समस्याओं के साथ - साथ जाति व्यवस्था और वर्गगत झगडे भी मुख्य है। गाँवों में जितने स्नेहभाव में अधिकता होती है उससे बढकर आपसी वैर में तीवृता विधमान होती है। घायल आदमी पीढियों तक अपना दर्द भूला नहीं पाता। आपसी बैर के मूल में जर, जमीन और जोरु ही कारण ने अजयसिंह के साथ बैर का कारण इस प्रकार बताया है - "इसने (छोटे कुंवर विजयसिंह ने) हमारी मजूरनी खेत में गिरा ली। देखा नहीं कि मजूरनी के संग मजुर भी है, हमारे पिता जी ने इशारा दिया सो अच्छी तरह कुचला। ठौर - कठौर मारा, मर्दानगी खत्म कर दी। बस तभी से बैर चला आ रहा है"[7] इस प्रकार स्पष्ट है कि बदलते हुए युग में व्यक्ति की सहनशीलता खत्म होती चली आई है। आज व्यक्ति आदर्श, समय के खोखलेपन की परतो को खोलकर सिर्फ निजीपन की खोज में अपने अस्तित्व को स्थिर बनाने की कोशिश में है यही इक्वीसवी शदी की निशानी है।

अत: कहना होगा कि नारी चेतना के विभिन्न रूपों की दृष्टि से मैत्रेयी जी की उपलब्धियां महत्वपूर्ण और उल्लेखनिय है। मैत्रेयी पुषा ने अपने रचनाओं में स्त्री के कुछ तीखे, ज्वलंत प्रश्नों, अंतविरोधों और विरोधाभासों को प्रस्तुत किया है। जिससे स्त्री-सृजन की एक अलग पहचान बनने लगी है। इनकी रचनाओं में स्त्री के अधिकारों के प्रति सजगता के साथ-साथ समाज की अन्य समस्याएँ भी उद्घाटीत हुई दिखाई देती है। इनकी सृजनात्मक आक्रमकता, तीखा और पितृक समाज की कडी आलोचना से परिपूर्ण है। यह परिवर्तन इक्कीसवी सदी में सर्वाधिक दृष्टित हुआ। जो स्त्री-लेखन सिर्फ घर, परिवार, बच्चे, स्त्री-पुरूष बिखराव तक सीमित था उस स्त्री-लेखन की आंतरिक और बाहरी दुनिया में इस सदी में काफी बदलाव आया है। सामान्य व्यक्ति के जीवन की दैनिक समस्याओं का आत्याधिक सहज और स्वाभाविक रूप से उदघाटून उनके इस उपन्यासों में हुआ है।

डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

संदर्भ :

1. मैत्रयी पुष्पा - अगनपाखी,वाणी प्रकाशन, दिल्ली,प्रथम संस्करण-2002,- पृ.5-6
2. वही - पृ. 17
3. वही - पृ. 72
4. वही - पृ. 73
5. वही - पृ. 35
6. वही - पृ. 36
7. वही - पृ. 140

PRINCIPAL
Shivaji College,Hingoli.
Tq.& Dist.Hingoli.(MS.)